शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'डरी हुई लड़की में स्त्री मनोदशा का अंकन

अकबर अली शेख
पार्वती बाई चौगुले कला एवं विज्ञान (स्वायत्त) महाविद्यालय
मडगाँव, गोवा, भारत

शोध संक्षेप

भारत के पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थित अत्यंत दयनीय है दुनिया इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर गयी है परन्तु भारतीय समाज में स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव न के बराबर है। पुरुष ने स्त्री को वासना तृप्ति का साधन मान रखा है। परिणामस्वरूप भारत में बलात्कार के सर्वाधिक मामले सामने आते हैं। स्त्री का स्त्रीत्व छीन लेने को पुरुष अपनी वीरता समझते हैं। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को हिंदी उपन्यासों में अनेक प्रकार से चित्रित किया है। पुरुषों के अत्याचार से पीड़ित स्त्री के मनोविज्ञान को समझना अत्यंत दुष्कर कार्य है ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपने उपन्यास 'डरी हुई लड़की में इस मनोविज्ञान को उजागर करने में सफलता हासिल की है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'डरी हुई लड़की में चित्रित स्त्री मनोदशा का विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

ख्यात साहित्यकार ज्ञानप्रकाश विवेक का जन्म 30 जनवरी 1949 को हरियाणा के बहादुरगढ़ जिले में हुआ। हिन्दी साहित्य जगत को हिन्दी गजल, कविता, कहानियों और लघुकथाओं से समृद्ध करने वाले ज्ञानप्रकाश विवेक का 'डरी हुई लड़की' चर्चित उपन्यास है। साहित्यिक योगदान के लिए आपको तीन बार पुरस्कृत किया गया। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं: अलग-अलग दिशाएं, शहर गवाह है, उसकी जमीन, शिकारगाह, मुसाफिरखाना। गजल संग्रह है: धूप के हस्ताक्षर, आंखों में आसमान। कविता संग्रह है: दीवार से झांकती रोशनी।

ज्ञानप्रकाश विवेक ने डरी हुई लड़की उपन्यास का कथानक दुष्कर्म पीड़िता के इर्दगिर्द बुना है। उपन्यास की नायिका नंदिनी दुष्कर्म के बाद अवसाद, क्षोभ, भय, एकांत और असुरक्षा की भावना से घिर जाती है। इससे बाहर निकलने में राजन उसकी मदद करता है। समय बीतने के साथ दोनों में अबोला प्रेम हो जाता है, परंतु वह प्रेम उपन्यास के अंत तक अभिव्यक्त नहीं हो पाता और अनेक प्रश्न छोड़ जाता है। उपन्यास में मनुष्यता के अनेक स्तरों को खोलने का सार्थक प्रयास किया गया है। बलात्कार से पीड़ित होने के बाद भी नंदिनी में जीने की अभिलाषा है। नायिका की सकारात्मक सोच उपन्यास को विशिष्ट बनाता है। भारत में जिस प्रकार महिलाओं पर इस प्रकार के अत्याचार बढ़े हैं, जिसमें लड़की का जीना दूभर हो गया है, ऐसे में यह उपन्यास उम्मीद की किरण है।

'डरी हुई लड़की' में स्त्री मनोदशा

लेखक ज्ञानप्रकश विवेक ने ऐसी युवती का चित्र खींचा है जो दुष्कर्म से प्रताड़ित है। जिसका सब कुछ छीनकर फेंक दिया है। आमतौर पर दुष्कर्म से प्रताड़ित लड़की लाज-लज्जा हेतु आत्महत्या कर लेती है, लेकिन उपन्यास की नायिका नंदिनी आत्महत्या तो नहीं करती हैं पर वह अवसाद में घिर जाती है। ऐसे समय में राजन उसकी

सहायता के लिए आगे आता है। नायक राजन नंदिनी को अचेतन से निकालता है। राजन न सिर्फ नंदिनी को सदमे से बाहर निकालता है बल्कि उसे एक अच्छी कंपनी में नौकरी प्राप्त करने में सहायता भी करता है। लेखक राजन के माध्यम से नंदिनी को नया जन्म देते हैं।

सम्पूर्ण उपन्यास अध्यायों विभाजित है, लेकिन उसका नामकरण नहीं किया गया है। 'डरी हुई लड़की' उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में रचा गया है। कथ्य मनोविज्ञान पर आधारित होने के कारण इसे मनोवैज्ञानिक उपन्यास की श्रेणी में रखा जा सकता है। कहानी का प्रारम्भ मेट्रो सिटी से होता है, जहाँ का जीवंत दृश्य लेखक ने उपस्थित किया है। "मेंरे अगल-बगल से जितने भी वाहन गुजरते हैं सब तेज रफ़्तार थे। रफ़्तार की आवाज़ फेंकते हुए वो आगे निकल गये। रफ़्तार हमारे दौर का सबजेक्ट हो चुका है। लोग अपने घर में भी तेज़-तेज़ चलते हैं। लेकिन मैं सोचता हूँ जो रफ़्तार में होते हैं क्या वो अपने आप में होते हैं।"**1** आज हर आदमी इस दौड़ में शामिल है। उन्हें किसी से कोई लेना-देना नहीं है। दिन-प्रतिदिन की भाग-दौड़ और मशीनों के सानिध्य में रहकर आदमी की संवेदनाएँ मरती जा रही हैं। इसीलिए सड़क के पास वाले मैदान में पड़ी घायल युवती को कोई देखता भी नहीं, यदि देखता है तो अनदेखा कर चला जाता है। "वो जो आकृति मुझे नज़र आ रही है किसी स्त्री की है। स्त्री और झाड़ियों में। यह सोचकर मैं भी भीतर तक काँप जाता हूँ। अगर वो स्त्री है तो उससे मेरा कोई रिश्ता नहीं, कोई वास्ता भी नहीं। फिर भी मैं व्याकुल-सा खड़ा हूँ।"**2** राजन न चाहते हुए भी उस युवती की मदद करना चाहता है जो घायल है। राजन के भीतर छिपी मनुष्यता लड़की की सहायता करने के लिए विवश करती है। किसी तरह राजन लड़की को अपनी कार में बैठाता है। लड़की कुछ भी बता सके, ऐसी स्थिति में नहीं थी। राजन को पुलिस थाने में रपट लिखवाना मुनासिब लगा। जहाँ सुरक्षा और न्याय की उम्मीद की जाती है, उसी स्थान पर जाने से युवती मना करती है। लड़की का मना करना सम्पूर्ण न्याय व्यवस्था पर तमाचा है। क्योंकि वहाँ सिर्फ रपट लिखवाई जाती है कोई कार्यवाही नहीं होती।

राजन लड़की को लेकर अस्पताल पहुँचता है। वहाँ एक लेडी डॉक्टर आकर पूछती है, क्या प्रॉब्लम है इनको ? राजन डॉ॰ फरीदा के समक्ष समस्या का बखान करता है। ओरों की भाँति उन्होंने केस दर्ज करने के लिए नहीं कहा, बल्कि उस लड़की की जाँच करना उचित समझा। ज्ञानप्रकाश विवेक राजन और डॉ॰ फरीदा जैसे संवेदनशीलपात्रों का सृजन कर, ऐसे ही मनुष्यों की परिकल्पना करते हैं। समाज में देखा गया है कि बलात्कारी स्त्री की स्थिति कैसी है। समाज उन्हें हीन भावना से देखता है। दुष्कर्म से प्रताड़ित स्त्री को देखकर उसपर हंसते हैं और शब्दों के बाण छोड़ते हैं। जिसकी वजह से उनका मनोबल और आत्मविश्वास छलनी हो जाता है। लोगों की ऐसी मानसिकता बन गयी है कि बलात्कारी स्त्री से कोई प्रेम या विवाह नहीं कर सकता। लेकिन लेखक ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपने उपन्यास 'डरी हुई लड़की में इस तथाकथित मानसिकता को भी तोड़ा है।

ट्रीटमेंट के पश्चात राजन नंदिनी को अपने फ्लैट में रखता है। नंदिनी अब एक जिंदा लाश बन चुकी है। जिसमें केवल प्राणों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हवा के झोंके, दरवाजे की आवाज़, टेलीफ़ोन की रिंग बेल आदि हर चीज से उसे डर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लगने लगता है। प्रत्येक क्षण भय बना रहता है कि कोई उसे दबोच न ले।

राजन हर दिन उसे पानी में बहुत सारा ग्लूकोज मिलाकर देता है। समय पर खाना और समय से दवाई देता। लेकिन इन सबके बावजूद राजन एक ऐसी ट्रीटमंट की आवश्यकता महसूस करता है जो उसे इस सदमे से बाहर निकाले। सबसे पहले वह नंदिनी के भीतर अपने प्रति विश्वास जगाना चाहता है। उसे विश्वास दिलाना चाहता है कि वह अब इस फ्लैट में सुरक्षित है। लेकिन तीन परूषों द्वारा एक बलात्कारी स्त्री कैसे एक अनजाने पुरुष पर विश्वास कर सकती है।

राजन ने ऑफिस जाना बंद कर दिया था। उसी की देखभाल में लगा रहता है। उसका दिल बहलाने के लिए अपने साथ बाजार भी ले जाता। राजन को नंदिनी से लगाव होने लगा था। अब नंदिनी के प्रति राजन के मन में कोमल भावनाएँ उत्पन्न होने लगी। एक संडे जब हम दोनों घर में थे। वो प्रिंटेड शिफॉन की साड़ी पहनकर अपने कमरे से निकली थी। मैं हतप्रभ-सा देखता रहा उसे। वो बेहद सुंदर लग रही थी। एक परिपक्व, शालीन और सौम्य।"**3** एक बलात्कारी लड़की में भी सौंदर्य होता है यह राजन के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है। क्योंकि समाज ऐसी लड़कियों को चरित्रहीन और सौंदर्यहीन समझता है। जब कभी भी नंदिनी जाने की बात करती उसे बहुत बुरा लगने लगता है। राजन को नंदिनी की आदत-सी हो गयी है। उसकी अपनी एक अलग दुनिया बन चुकी थी। जहाँ केवल खामोशी है।

राजन को नंदिनी से पता चलता है कि वह नौकरी के सिलसिले में यहाँ आई थी। राजन नौकरी दिलवाने में मदद करता है। नंदिनी तीन बार इंटरव्यू देकर भी चुनी नहीं गयी। लेकिन एक दिन बड़े आत्मविश्वास भरे लहजे में उसने कहा सर कहीं पढ़ा था विनर्स नेवर क्विट एंड क्विटर्स नेवर विन"**4** उपर्युक्त वाक्य सुनकर राजन दंग रह जाता है। अगर नंदिनी बलात्कार के बाद अपनी जिंदगी से क्विट कर देती तो वह आज इस मुकाम पर नहीं पहुँचती। चौथी बार कनवरजेंस नामक कंपनी में साक्षात्कार देती है और सिलेक्ट भी होती है। आज से नंदिनी के लिए नया जीवन शुरू होता है। एक नयी सुबह उसका इंतजार कर रही है। आज ही नंदिनी ने नौकरी ज्वाईन कर ली और आज ही नंदिनी का जन्मदिन भी है। आज की रात राजन अपने मन की बात नंदिनी को बता देना चाहता है। बड़ी शिद्धत से पूरे कमरे को सजाता है। सारी तैयारी के बाद नंदिनी को आवाज लगाता है। प्रतिउत्तर न मिलने के कारण वह हर कमरे में नंदिनी को ढूंढ़ता है। क्या वह मज़ाक तो नहीं कर रही है। नंदिनी न मिलने के कारण राजन की धड़कनें बढ़ने लगती हैं। डाइनिंग टेबल पर रखी नोटबुक को पढ़ने के बाद पता चलता है कि वह चली गयी है। राजन के पैरों तले ज़मीन खिसक जाती है। राजन को पता था कि नंदिनी के पास केवल सत्रह रुपये थे। यहाँ से बस स्टैंड जाने में पैसे खर्च हो जाएंगे। इसलिए राजन तुरंत बस स्टैंड पहुंचता है। बस स्टैंड पर उसे एक ऐसी आकृति नजर आती है जिसके हाथ में अटैची और बैग है। उसे पता चल जाता है कि बेंच पर बैठी लड़की नंदिनी है और वह बेंच की ओर बढ़ता है। उपन्यास यहीं समाप्त हो जाता है और पाठकों के मन में कई सारे सावल उठने लगते हैं। क्या वाकई में बेंच पर बैठी लड़की नंदिनी है ? बेंच पर बैठी लड़की नंदिनी है तो क्या वो राजन के साथ चली जाएगी ? क्या नंदिनी राजन को वहीं छोड़कर आगे चली जाएगी ? आदि ढेरों प्रश्न

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पाठक के मन में उठते हैं और उन्हें विचार-विमर्श करने के लिए मजबूर करते हैं। 'शेखर एक जीवनी', 'झूठा सच' की भांति लेखक अपने उपन्यास 'डरी हुई लड़की की भी शृंखला बनाना चाहते हैं ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि एक पुरुष उपन्यासकार होने के बावजूद ज्ञानप्रकाश विवेक ने उस स्त्री की मानसिकता से भली-भाँति परिचित होकर उपन्यास का सृजन किया है जो दुष्कर्म से पीड़ित है। वर्ष 2018 में हरियाणा राज्य के नूह जिले में रहने वाली 2 किशोरियों का 8 से 9 पुरुषों द्वारा गेंग रेप हुआ था। एक लड़की ने गले में फंदा डालकर आत्महत्या कर ली और दूसरी 16 वर्षीय लड़की सोमवार दोपहर को आत्महत्या कर लेती है। लड़की के पिता टाइम्स ऑफ इंडिया से कहते हैं कि "We are blaming ourselves for leaving her alone. We want the accused to be given the death penalty".(5)

उपर्युक्त वाक्यों से ज्ञात होता है कि विक्टिम को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। राजन की तरह विक्टिम की हर हरकत पर नज़र रखनी चाहिए। दवाइयों के साथ ही साथ उनके लिए माहौल में भी बदलाव लाना चाहिए। उन्हीं की तरह नंदिनी समझ बैठी है कि उसने अपना स्त्रीत्व खोया है। लेकिन राजन प्रत्येक क्षण उसे समझता है कि उसका स्त्रीत्व अब भी सुरक्षित है। स्त्री के गुणों से ही उसका स्त्रीत्व झलकता है। अंततः राजन नंदिनी को स्त्रीत्व का अहसास दिलाता है। अधिकांश रचनाओं में बलात्कारी स्त्री को आत्महत्या करते दिखाया गया है, लेकिन लेखक राजन के माध्यम से नंदिनी को एक नया जीवन देते नज़र आते हैं। समाज में राजन और डॉ॰ फरीदा जैसे पात्रों की कल्पना लेखक करते हैं। उपन्यास का प्रतिपाद्य यही है कि जिस तरह आज एक बलात्कारी स्त्री सामाजिक ताने से विवश होकर आत्महत्या करती है, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। समाज में राजन की भाँति भी अनेक पुरुष है जो उनके जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डरी हुई लड़की, ज्ञानप्रकाश विवेक, पृष्ठ 17
2 डरी हुई लड़की ज्ञानप्रकाश विवेक, पृष्ठ 19
3 डरी हुई लड़की ज्ञानप्रकाश विवेक, पृष्ठ 133
4 डरी हुई लड़की ज्ञानप्रकाश विवेक, पृष्ठ 147
5 New York Post, May 3, 2018